14/40
419

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

# दृष्टि
The Vision

# हिन्दी साहित्य
## (Hindi Literature)

टेस्ट–14
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2314**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>Time Allowed: Three Hours | अधिकतम अंक : 250<br>Maximum Marks : 250 |
|---|---|

नाम (Name): Praduman kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01/09/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 8 | 1 | 1 | 4 | 9 | 2 |

## Question Paper Specific Instructions

*Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:*

*There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.*

*Candidate has to attempt FIVE questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly and should be adhered to.*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 140½  टिप्पणी (Remarks):

E-51

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) चोट सताँणीं बिरह की, सब तन जरजर होइ।
मारणहारा जाँणि है, कै जिहिं लागी सोइ।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ संत काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास की हैं जिसका संकलन श्यामसुन्दर दास ने 'कबीर ग्रन्थावली' में किया है। यह "विरह को अंग" से लिया गया है।

प्रसंग - राम के विरह को अद्भुत व्यंजना हुई है। कबीर ब्रह्म रूप ईश्वर के विरह में डूबे हैं।

व्याख्या - विरह के प्रकार ही मुझे चोट महसूस हो रही है यह पूरा शरीर जरजर हो गया है जिस प्रकार किसी मरे हुये को जगाते हैं उसी प्रकार मेरी स्थिति एक समान हो गई है हे प्रभु



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अब तो कृपा कीजिये

काव्यगत सौंदर्य

भाषा - सधुक्कड़ी पंचमेल खिचड़ी
काव्यरूप - मुक्तक
संगीतात्मकता, गेयता
अलंकार - (रूपक)

विशेष

- ब्रह्म रूपी ईश्वर का विरह दिखाया गया है यही अतिशयोक्ति विरह नागमती के विरह में दिखता है "यह तन जारौं छार के"
- खड़ी बोली की आरंभिक प्रवृत्तियाँ विद्यमान है (न → ण का प्रयोग)
- ब्रह्म निर्गुण है कबीर निर्गुण ब्रह्म की आराधना करते हैं
"निर्गुन राम जपहु रे भाई"

6



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे।
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

**सन्दर्भ** - प्रस्तुत पंक्तियाँ कृष्णकाव्यधारा के शिखर कवि सूरदास जी की है जिसका संकलन रामचन्द्र शुक्ल ने भ्रमरगीतसार में किया है।

**प्रसंग** - उद्धव के गोकुल आने पर गोपियाँ उद्धव एवं मथुरा पर व्यंग्य कर रही हैं।

**व्याख्या** - गोपियाँ कह रही हैं हे उद्धव मत किया बुरा क्रोध, वरना वह मथुरा ही ऐसी नगरी है जहाँ जो भी जाता है भूल जाता है। जैसे कृष्ण मथुरा जाके भूल गये हैं तथा हमारी आँखें उन्हें आज भी निहार रही हैं इस यमुना किनारे बैठ कृष्ण की लीलाओं को याद करते हैं तथा कि कृष्ण स्मृतियों में क्यों जाते हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

**काव्यगत सौंदर्य**

भाषा - ब्रजभाषा
अलंकार → रूपक, अनुप्रास
काव्यरूप → मुक्तक
गेयता, संगीतात्मकता विद्यमान

**विशेष**

1) विरह का सुन्दर उपालम्भ किया है। शुक्ल जी भी कहा है श्रृंगार रस का ऐसा सुन्दर उपालम्भ कोई दूसरा नहीं है

2) गोपियों को विरहदग्ध दिखाया है। यही स्थिति गुप्त की उर्मिला, तुलसी की सीता में है।

3) मथुरा पर व्यंग्य करते हुए उसे काजर के समान बताया है जैसे कबीर ने भी कहा है "यह संसार कागद की पुड़िया"



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकालीन श्रृंगारिक कवि "बिहारी" जी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' से ली गयी है।

**प्रसंग** - सामंतवादी श्रृंगारिकता की झलक के साथ नायक नायिका मिलन का सुन्दर वर्णन किया है। बिहारी की श्रृंगारिकता रीतिकालीन परिवेश का परिचायक है।

[illegible]

**व्याख्या** - नायिका का श्रृंगारिक वर्णन करते हुए कह रहे हैं नायिका की चमक, तमक, हँसी, महक, ऐसी है कि उससे देख नायक लट्टू हो गया है जैसे रात्रि के समय सभी संत मुग्ध हो सब सोते हैं वैसे ही सब उसे देखकर मुग्ध हो रहे हैं लेकिन जिसने उसे नहीं देखा मानो जीवन में बहुत बड़ी हानि कर


Copyright – Drishti The Vision Founda

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कर ली है।

**काव्यगत सौंदर्य**

भाषा - ब्रजभाषा
अलंकार - रूपक
काव्यरूप - मुक्तक
रस - श्रृंगार

**विशेष**

- सामंती मानसिकता का उद्घाटन किया है।
- बिहारी ने उक्त पंक्तियों में गागर में सागर पंक्ति चरितार्थ हुई है।
- बिम्बात्मकता का सुन्दर वर्णन - ग्रियर्सन ने भी कहा है - "बिहारी जैसे कवि पूरे यूरोप में नहीं है"
- छोटी बातों में बड़ी बात कह कर समास क्षमता का सुन्दर प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्ब।
कंत पियारा बाहिरैं हम सुख भूला सर्ब।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत पंक्तियाँ मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत के "नागमती वियोग" खण्ड से ली गई है।

**प्रसंग** - रतनसेन के पद्मावत को पाने जाने के ~~...~~ गया है वहीं नागमती वियोग में पड़ी रतन सिंह का पथ ताक रही है।

**व्याख्या** - आषाढ़ का महीना आ गया है तो विरह रूपी दुंद और बढ़ गया है बादल तेज गड़गड़ाहट के साथ बज रहे हैं बादल के घने अंधेरा कर दिया है अब मेरी रक्षा कौन करेगा हे प्रिय आप कहाँ हैं कोकिला (कोयल) अपनी मधुर आवाज से मेरे विरह को और बढ़ा रही है साथ ही नक्षत्र भी आ गया है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अब मेरे इस मन्दिर रूपी हृदय पर कौन छाया करेगा। हे प्रिय आप लौट आइये तथा मुझे सब समस्याओं से बाहर निकालिये।

**काव्यगत सौंदर्य** - भाषा → अवधी
काव्यरूप → प्रबंधकाव्य
अलंकार - अतिशयोक्ति
रस - वियोग

**विशेष**

- मध्यकालीन नारी की हालत की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है
- नागमती का रानीपन नहीं नारीपन उभरा है जो जायसी के साधारणीकरण की सुन्दर अभिव्यक्ति है
- विरह का ऊहात्मक वर्णन जो फारसी परम्परा से प्रेरित लगता है
- बारहमासा वर्णन का सुन्दर प्रयोग
- शुक्ल ने भी कहा है - नागमती का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय विशेषता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त में निज शक्ति का,
जिससे रूका वह स्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनीतता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर-बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की भावप्रधान महाकाव्यात्मक रचना 'कामायनी' से ली गई है।

**प्रसंग** - कामायनी के श्रद्धा सर्ग से उद्धृत है श्रद्धा जी को विचलित होते दिखाया गया है।

**व्याख्या** - इसके दो अर्थ परिलक्षित होते हैं एक समालोचक है जो कामायनी की नायिका "श्रद्धा" के विचलित रूप को दर्शा रहा है दूसरा मानव मन की भावना के समान मानव के मन में शुरू होती श्रद्धा को दिखाया गया है कि कैसे मानव मन इतना जागती है फिर अनुदारता आती है बुद्धि भी स्त्री से उत्पन्न होती है जिससे यह श्रद्धा के विपरीत कभी-कभी कुमति (गलत कार्य) हो जाती है

मौलिक व्याख्या अर्थ छह भाव-भावी थे---

**काव्यगत सौंदर्य** - भाषा - खड़ी बोली
काव्यरूप - भावप्रधान महाकाव्य
गेयता, संगीतात्मकता विधमान
अलंकार - रूपक

**विशेष**

1) मानव मन में उपजी श्रद्धा के समान वर्णन किया गया है एवं जयशंकर प्रसाद जी ने कहा "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि रूपक का सुन्दर समन्वय हो गया है।"

2) खड़ीबोली का सरल एवं प्रवाहमयी प्रयोग हुआ है

3) ग्रियर्सन ने इसे अन्योक्ति रचना माना है ~~जाता~~



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी जयशंकर प्रसाद का भावप्रधान महाकाव्य है जो छायावाद में विकसित हुई विधा है तथा कामायनी में जयशंकर प्रसाद का मूल दर्शन अर्थात् प्रत्याभिज्ञा दर्शन परिलक्षित हुआ तथा पाश्चात्य के कुछ अन्य विचारों का भी प्रभाव कामायनी पर परिलक्षित होता है।

जयशंकर प्रसाद के समय में पाश्चात्य चिंतकों का प्रभाव भारतीय बौद्धिक जगत पर पड़ रहा है तथा प्रसाद के नाटक में भी वही प्रभाव परिलक्षित होता है।

पाश्चात्य में डार्विन के विकासवाद की थ्योरी बहुत प्रचलित हो रही थी जिसमें विकास की प्रक्रिया में उन्हीं जीवों का अस्तित्व रह जायेगा जो ज्यादा प्रतिस्पर्धी होंगे दिखाया गया है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यही भाव कामायनी में भी दिखता है।

"स्पर्धा में जो उत्तम ठहरें वो रह जावें"

गांधी द्वारा समर्पित नव्य वेदान्त का प्रभाव भी भारतीय जगत पर था वही कामायनी में दिखता है तथा यह पहुँचकर कामायनी अपने से आगे के समय का काव्य बन जाते हैं।

"वे पवड़ जो बचे पड़ें इस अन्चल जगती के
क्या उनके कुछ अधिकार नहीं हैं यह सब ही हैं कीड़े"

पाश्चात्य में प्रचलित मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव भी कामायनी में दिखता है

"कहीं की जो आई बन बैली
कभी नहीं जो मिलने को"

साथ ही छायावाद की मूल प्रवृत्ति अर्थात् प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन में मुख्य है –

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"यह प्रकृति परम रमणीय
अमेल ऐश्वर्य सौंदर्य लीन"

किन्तु प्रसाद का मूल दर्शन शैवाद्वैतवाद से प्रभावित प्रत्यभिज्ञा दर्शन है जिसके व्याख्याता अभिनवगुप्त थे। इसमें इच्छा, क्रिया व ज्ञान के बीच संतुलन को ही जीवन की समस्या का मूल हेतु माना है।

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की"

साथ ही यदि किसी ने इन इच्छा, क्रिया व ज्ञान के बीच संतुलन बाधा लिया उसे जीवन में न केवल दुख बल्कि आनन्द की प्राप्ति होगी तथा दुख व सुख से ऊपर उठ जाएगा। -

"समरस थे जड़ या चेतन
सुन्दर साकार बना था,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आत्मा एक विलसती,
आनंद अखण्ड घना था"

इस प्रकार उपरोक्त प्रसाद का दर्शन पश्चिम एवं भारतीय दर्शन के मिश्रण से बना है किन्तु प्रसाद का मूल दर्शन प्रत्यभिज्ञा दर्शन है जहाँ इच्छा, क्रिया, ज्ञान में संतुलन पाके ही मनुष्य जीवन में आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

[redacted]

(ख) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शुक्ल जी ने सूर के काव्य को दो भागों में बांटा है वक्रता, वाग्विदग्धता अर्थात् बात में घुमा कर कहने की प्रवृत्ति को वाग्विदग्धता कहते हैं साथ ही व्यंग्य भी इसी के अन्तर्गत आता है

सूर का काव्य वक्रता एवं वाग्विदग्धता का सुन्दर काव्य है जहाँ गोपियाँ अपने प्रेम के लिये उद्धव पर व्यंग्य करती है तथा मेहमान का पर्याप्त सम्मान भी बनाये रखती हैं

"उधौ पा लागों चले आये
तुम देखो जिन माधव देखे, तुम तप ताप निवारा॥"

उद्धव पर व्यंग्य करती हुई गोपियाँ यहाँ ही नहीं रुकती तथा हर उस व्यक्ति वस्तु पर व्यंग्य करती है जो उन्हें कृष्ण से दूर करती हैं



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी क्रम में वे मथुरा पर व्यंग्य करती हुए कहती हैं कि यह काजल की कोठरी है जिसने हमारे कृष्ण को बंधक कर लिया है।

"यह मथुरा काजर की कोठरी, जे आवहीं ते कारे।"

गोपियों को पता चला है कि मथुरा में कोई कुब्जा नाम की स्त्री है जिसके चन्दन की महक मात्र पर कृष्ण उस पर मोहित है तब गोपियाँ कुब्जा पर भी नैतिक व्यंग्य करती हैं।

"उधौ जोग माथे भाग
कुब्जा को पटरानी कीन्हीं, हमहि देत बैराग।"

जो प्रकृति मधुवन कृष्ण के संयोग समय शीतलता प्रदान करता था वही वियोग में जलन महसूस करा रहा है तथा गोपियाँ उस हरे-भरे मधुवन पर व्यंग्य करती हुए पूछ रही है



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुम विनो लछ्ण के भी कौने पहरे जो
हो तुम्हें लाज नहीं आती।
"मधुकर तुम कंत सहत हो
विरह वियोग व्याप सुन्दर के नाते क्यों न जरे"

अतः यह कहने में
कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि। सूरदास
का काव्य वक्रता एवं वाग्विदग्धता पर
अद्भुत रचना का काव्य है। शुक्ल ने भी
कहा है उपालम्भ का ऐसा सुन्दर काव्य कोई
दूसरा नहीं है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ब्रह्मराक्षस" गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा
रचित लम्बी कविता है जिसमें फैंटेसी
शिल्प का प्रयोग कर मुक्तिबोध ने
मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्म संघर्ष को
उभारा है। यह अपनी बिम्ब धर्मिता के कारण
में विख्यात रहा है।

मुक्तिबोध ने ब्रह्मराक्षस — ब्रह्मराक्षस
में भयानक बिंबों का बेहतर प्रयोग
किया किया है। मुक्तिबोध ने स्वयं कहा
है मेरी यह रचना भयानक खबरों का है
कविता की शुरुआत बिंब से शुरू होती है।
"शहर के उस ओर
खण्डहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी"

शुरुआत में ही
रोमांचकारी वर्णन एवं नाटकीय ढंग से वर्णन
किया है कि ~~साक्षात~~ साक्षात बिंब



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बन जाता है।

कैटेसी शिल्प के माध्यम से मुक्तिबोध ब्रह्मराक्षस के अन्तर्मन में पहुँच गये हैं तथा बेहतर बिम्ब क्षमता कौशल के कारण उस अन्तर्मन की बिम्बात्मक अभिव्यक्ति की है कि पाठक बिंब महसूस करते हैं।

"खूब ऊँचा जीना साँवला
उसी अंधेरी सीढ़ियाँ"

ब्रह्मराक्षस में आत्मचेतस तथा विश्वचेतस के बीच गहरा द्वंद्व व्याप्त है। जिस कारण वह काले पड़ाव पर है तो खुद समस्या झेल रहा है। जिसका वर्णन भी वर्णनात्मक (बिम्बात्मक) रूप में हुआ है

"एक चढ़ना और उतरना
मोच पैरों में
और छाती पर अनेकों घाव"

ब्रह्मराक्षस की अन्तर्द्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के कारण इन दोनों विचारधारा आत्मचेतस विश्वचेतस में इस प्रकार पिस गया है कि इसकी हालत एक बीच प्रकार से हुई है। मुक्तिबोध ने इसे भी बिम्बात्मक रूप में वर्णित किया है

"पिस गया है
भीतरी और बाहरी दो पाटन के बीच
ऐसी ट्रैजिडी है नीच"

ब्रह्मराक्षस में मुक्तिबोध की बिम्बात्मक क्षमता के कारण यह कविता पढ़ी तथा देखी जा सकती है। इसी बिंब क्षमता के कारण ब्रह्मराक्षस ने नाटकीय रूप धारण कर लिया है। ऐसी क्षमता निराला एवं मुक्तिबोध जैसे कुछ ही कवियों में है।

7/15

बेहतर और मॉडल उत्तर देखें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"असाध्य वीणा" अज्ञेय द्वारा रचित लम्बी कविता है जो जापानी किंवदंती आधार को लेके लिखी गई है। इसे सृजनशीलता जैसे गुणों के साथ ही व्यक्ति एवं समाज के बीच अन्तर्संबंध को भी दिखाया गया है।

अज्ञेय समाज तथा व्यक्ति को अन्तर्संबंधित मानते हैं उनका मानना है कि व्यक्ति समाज में स्वतंत्र है लेकिन समाज से नही" उनकी प्रसिद्ध लाईन है

"हम नदी के द्वीप हैं वह हमें आकार देती है"

इसी प्रकार असाध्य वीणा में दिखाया गया है कि प्रियंवद वीणा को साध सका है क्योंकि वह जानता है की संगीत उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि मा

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation


सम्भाती नहीं है वरन उसने संगीत को समाज की सम्पत्ति माना है

"श्रेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में"

प्रियंवद से पहले कोई भी वीणा को नहीं बजा पाया क्योंकि जिन्होंने भी कोशिश की उनका मानना था कि संगीत उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है। जबकि प्रियंवद ने स्वयं को शून्य में पहुँचाकर संगीत को समाज की सम्पत्ति माना है जब वह कहता है-

"तू उतर वीणा के तारों पर
खुद को गा जा से गा"

इसी आत्मविलयन एवं अहंकार शून्यता के कारण ही वीणा में स्वर पड़ता है वीणा बज उठती है

"वीणा सहसा झनझना उठी"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

वीणा से निकला स्वर सभी के लिये भिन्न है। भारत में बासोदर को रस माना गया है। रस आधार पर सबको अपने अपने स्वभाव के अनुसार संगीत सुनाई दिया है तथा सभी के लिये उसकी अनुभूति भिन्न-2 थी।

"उठ गयी सभा
सब अलग अलग एकांकी पार तिरे
युग पलट गया"

सभी ने संगीत की अनुभूति भिन्न-2 की है।

"राजा ने अलग सुना
रानी ने अलग सुना
प्रियंवद ने अलग सुना"

संगीत के बसोद से सभी को भिन्न भिन्न रूप से अनुभूति प्राप्त हुई है तथा सभी ने हल्का महसूस किया "राजा का मुकुट सहसा हलका होगया"



इस प्रकार असाध्य वीणा एक भिन्न अर्थ में व्यक्ति और समाज के संबंधों की कविता है जिसमें सभी व्यक्ति समाज से बंधे है। तथा उनसे अलग होकर उनका अस्तित्व नहीं है।
साथ ही असाध्य वीणा पर टी.एस. इलियट के अस्तित्ववाद एवं कीर्केगार्ड का प्रभाव भी परिलक्षित होती है।

11½



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ''मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।' विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस फैंटेसी शिल्प पर आधारित मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता है जिसमें मुक्तिबोध ने केन्द्रीय संवेदना के तौर पर "मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष" दिखाया है।

कविता में दिखाया है कि ब्रह्मराक्षस अपने कर्तव्य को पूरा न कर पाने के कारण ट्रैजिडी का शिकार हुआ है। उसका कर्तव्य अर्थात् सामाजिकता एवं समाज के लिए कुछ था, वह अपना ज्ञान शिष्य को नहीं दे पाया है, यही संघर्ष है।

आधुनिक मध्यवर्ग भी ब्रह्मराक्षस की तरह समाज से कट गया है जिसमें समाज के लिये कुछ करने की ललक तो होती है किन्तु वह निरपेक्ष बौद्धिक चिंतन में ही पड़ा रहता है, कभी सक्रिय नहीं रहता है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बढ़ते शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण व्यक्ति अपनी गाँव, संस्कृति से कट गया है तथा उसी अपराध बोध से भरा है। शहर को ही यहाँ प्रतीक रूप में लिया गया है।

"शहर के उस ओर खंडहर की तरफ परित्यक्त सूनी बावड़ी"

मध्यवर्ग भी अपने इसी अपराध के कारण अन्तर्द्वन्द्व में रहता है। यह अन्तर्द्वन्द्व महाभाव के मदेवा का है, यही भाव संवेदना का है तथा यही अन्तर्द्वन्द्व अंधेरे में कविता में भी है।

शहरीकरण के कारण यह अन्तर्द्वन्द्व बढ़ा है तथा निरपेक्ष बौद्धिक चिंतन के कारण जिस प्रकार ब्रह्मराक्षस का ट्रैजिक अंत हुआ है उसी प्रकार यह मध्यवर्ग भी इसी अपराध बोध में जीता है।



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"जिस गया पर बीतती
और बाहरी दो पाटन के बीच
ऐसी ट्रेजिडी है नीच"

अतः ब्रह्मराक्षस रचना मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष है तथा अपनी जिम्मेदारियों से तटस्थ हो चुके समाज के लिये मुक्तिबोध का यह पाठ बहुत जरूरी है जो उनके जिम्मेदारी की भावना को जगायेगा।



(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' निराला की ही 'शक्ति-पूजा' है। इस मत की सार्थकता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता राम ~~कविता~~ की शक्तिपूजा अनेक अर्थ धारण करती है। डा० निर्मला जैन ने इसे शक्ति की मौलिक कल्पना माना है तो बच्चन सिंह ने इसे स्वयं निराला की आत्मकथा या शक्तिपूजा माना है।

निराला की पूर्ववर्ती रचना जैसे अंधकार में समाप्त हुई थी उसी अंधकार से शक्तिपूजा की शुरुआत हुई है

"दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज जो नहीं कही"

साथ ही जिस प्रकार शक्तिपूजा में शक्ति का नैतिक पक्ष में होना दिखाया है जहाँ शक्ति रावण के पास चली गई है

"उतरी महाशक्ति या रावण से आमंत्रण"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उसी प्रकार निराला के जीवन में यह शक्तिहीनता आर्थिक जीवन में है उनकी कविताओं को पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता है।

अन्तिम रूप में शक्तिपूजा में दिखाया गया आत्मधिक्कार का भाव जहाँ राम कहते हैं

"धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध"

यही आत्मधिक्कार का भाव निराला का जीवन में आता है जब उनकी युवा पुत्री की मृत्यु हो जाती है जिसके बाद उन्होंने सरोज स्मृति की रचना की।

राम की शक्ति पूजा में राम का सीता के लिये जो अटूट प्रेम है वही प्रेम निराला जी का अपनी पत्नी के लिये है।

"जानकी! हाय, उद्धार प्रिय का हो न सका"

मनोहरा देवी का निराला के जीवन से साथ छोड़ना तथा उनके एक पत्नी व्रत पर कायम रहना ही राम के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

समान परिलक्षित होता है।

शक्ति पूजा में योग साधना पद्धति भी दिखाई दी है जहाँ राम आरती करते हैं

"रूप के रूप हुए राघवेन्द्र के पंच दिवस"

निराला स्वयं भी योग पद्धति से जुड़े हुए था तथा जिसका शारीरिक वर्णन राम का किया गया है वही निराला स्वयं का भी है अतः प्रतीकात्मक अर्थ में यह स्वयं निराला की शक्तिपूजा को कहती है जिसमें सरोज स्मृति से उठकर हुई निराशा से शक्तिपूजा में स्वयं आये हैं तथा सफल हुये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - ख

**5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50**

(क) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें, जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश रामविलास शर्मा के निबंध ~~रामविलासशर्मा~~ 'तुलसी-साहित्य के सामंत विरोधी मूल्यों' से लिया गया है

**प्रसंग** - रामविलास शर्मा सामंतवाद की स्थिति का वर्णन करते हुए दिखा रहे कि किस प्रकार उस समय के हिसाब से तुलसी का काव्य प्रगतिवादी है

**व्याख्या** - शर्मा जी तुलसी को सामंत विरोधी कहने वालों पर तंज कसते हुए कह रहे हैं कि पहले आप समय का आकलन तो करो कि उस समय कौन से मनुष्यों का भी व्यापार होता था, काबुल बाजार में तथा ब्रिटिश काल में भी कैसे लाखों दासों की जाति किरोत होती थी।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उसके बाद ही हमें तुलसीदास की प्रगतिशीलता दिखेगी।

**काव्यगत सौंदर्य** - भाषा - खड़ीबोली
काव्यरूप - निबंध

**विशेष**

* मुगल कालीन, ब्रिटिशकालीन व्यवस्था तथा दासों के बेचने खरीदने जैसी अमानवीय कृत को दिखाया गया है
* तुलसीदास को प्रगतिवादी उनके काव्य की प्रगतिशील दिखाने का प्रयत्न करते हैं
* शुक्ल जी ने भी तुलसी के काव्य को प्रगतिशील माना है

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this spa

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

**प्रसंग** - गुप्तसाम्राज्य के सेनापति धातुसेन द्वारा यह बात कही जा रही है कि गुप्त साम्राज्य की स्थिति डावाडोल है

महत्वपूर्ण

**व्याख्या** - हूणों के आक्रमण से सचेत होने की प्रेरणा देते हुए धातुसेन कह रहा है कि जिस प्रकार आँधी होने से पहले आकाश में बादल छा जाते हैं बिजली गिरने से पहले नील कादम्बनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है आज वही गुप्त साम्राज्य की है इसलिए हूणों के आक्रमण के प्रति हमें सचेत एवं तैयार रहना चाहिए



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा → तत्सम खड़ीबोली

काव्यात्म - नाटक

**विशेष**

⊛ गुप्तकालीन परिवेश को लेते हुए तत्कालीन समाज को प्रेरित करना चाहते थे यही नवजागरणवादी नवोदय गुप्त जी एवं भारतेन्दु में दिखता है।

* भाषा - प्रवाहमयी एवं बोधगम्य है।
* प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है (आँधी आने से पहले आकाश स्तम्भित होना)
* चित्रशैली का भी प्रयोग हुआ है।
* जयशंकर प्रसाद के काव्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की झलक दिखती है।

ठीक है

5½

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this s



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Vision Foundation

(ग) नहीं, ये बातें गिने-चुने मूर्खों को छोड़कर, अब किसी को परेशान नहीं करतीं। परेशान करना तो दूर, क्षण-भर के लिए भी किसी के दिमाग में नहीं आतीं। कुछ बातें, कुछ तथ्य, कुछ स्थितियाँ प्रचलित होते-होते सबके बीच इस तरह स्वीकृति पा लेती हैं कि वे फिर लोगों की सोच की सीमा में रहती ही नहीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश 1979 ई० में रचित उपन्यास 'महाभोज' का है जिसकी लेखिका रचियता मन्नू भण्डारी जी है।

**प्रसंग** - लेखिका तथ्य रहने पर व्यंग्य करते हुए बता रही है कैसे ऐसे लोग संवेदनहीन हो जाते हैं।

प्रसंग बताएँ

**व्याख्या** - लेखिका ने राजनैतिक विद्रूपताओं के साथ ही सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट की है कि कुछ लोगों को छोड़कर अब किसी को ये बात परेशान नहीं करती है न ही किसी के दिमाग में आती है। जो बातें समाज में ऐसी हो गयी है मानों जैसे वे प्रचलित तथ्य हो, तथा फिर यह बाते किसी की सोच में रहती ही नहीं है



दृष्टि The Vision — 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कालक्रम → उपन्यास
भाषा → खड़ीबोली

**विशेष**

* महाभोज में सामाजिक, राजनैतिक विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है
* तत्कालीन पर व्यंग्य कर रही है जैसा ही व्यंग्य दिनकर जी ने कुरुक्षेत्र में किया है "समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध जो तटस्थ है समय लिखेगा उनके भी अपराध"
* भाषा सरल, बोधगम्य एवं प्रवाहमयी है।
* सामाजिक यथार्थ को पूरी नग्नता से दिखाया गया है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision — 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

(घ) लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद द्वारा 1936 में रचित महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान से ली गई है। (लिया गया)

**प्रसंग** - रायसहाब जमींदारी को जल्द ही समाप्त होने की बात कर रहे हैं।

**व्याख्या** - रायसहाब कह रहे हैं जल्द ही यह जमींदारी प्रथा समाप्त होने वाली है। मैं उस दिन के लिये तैयार बैठा हूँ। वह मेरे लिये उद्धार का दिन होगा, इन परिस्थि ने हमारा सर्वनाश किया है हम इसी के शिकार बने हुए हैं। यह संपत्ति का बेड़ा जब तक सर पर रहेगा, यह अभिशाप रूप में रहेगा ही रहेगा, हम उस मानवता का पद न पा सकेंगे जहाँ पहुँचना हर व्यक्ति

रायसाहब





कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन का लक्ष्य होता है।

भाषा - खड़ीबोली

विधा - उपन्यास

**विशेष**

1) जमींदार वर्ग में उठ रहे अपराध को दिखाया है
- भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है
- ढहते सामंतवाद एवं उभरते पूंजीवाद की झलक दिखती है
- प्रेमचन्द ने जमींदार में व्याप्त शोषण को दिखाया है रायसहाब स्वयं कह रहे हैं यह व्यवस्था शोषक रूप है
- सूत्रशैली का प्रयोग हुआ है

ठीक है

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है, क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

**संदर्भ** - प्रस्तुत गद्यांश महान नाटककार मोहन राकेश के प्रसिद्ध एवं कालजयी नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

**प्रसंग** - कालिदास अन्तिम पड़ाव में अंक मल्लिका से कह रहा है कि शायद तुम मुझे पहचानती नहीं हो।

**व्याख्या** - उज्जयिनी से लौटने के बाद कालिदास मल्लिका के घर जाता है मल्लिका उसे देखते रहती है तब वह कहता है शायद पहचानती नहीं हो, ना पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह नहीं रहा जिसे तुम जानती थी, कोई और हूं। और मुझे स्वयं नहीं पता कि मैं कौन हूं मैं स्वयं को ही भूल गया हूं तथा स्वयं को ही नहीं पहचानता हूं।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा - खड़ीबोली
विधा - नाटक

**विशेष**

- सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है।
- 1960 के दशक के शहरी मध्यवर्ग की स्थिति को दर्शाता है अकेलापन अस्तित्ववाद आत्मनिर्वासन व्याप्त हुआ है।
- ऐसा ही अकेलापन मोहन राकेश की कहानी एक और जिंदगी में है।
- भाषा तत्समीयुक्त है किन्तु प्रवाहमयी एवं बोधगम्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या 'मैला आँचल' को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है? तार्किक उत्तर लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"मैला आँचल" फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित आंचलिक उपन्यास है तथा यह हिन्दी का प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास है जो कि आंचलिक उपन्यास के लिये कसौटियाँ निर्धारित करती हैं तथा रेणु जी का 1957 में छपा दूसरा आंचलिक उपन्यास परती परिकथा भी इसके समकक्ष की का है।

मैला आँचल में मेरीगंज के प्रतीक गाँव के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का अंकन किया गया है जिसमें रेणु जी ने प्रत्येक पक्ष को पूरी बारीकी से दिखाया है उन्होंने लिखा "इसमें फूल भी है शूल भी है धूल भी है काँटे भी हैं गुलाब भी हैं, कीचड़ भी है सुन्दरता भी है कुरूपता भी है मैं किसी से भी अपना दामन बचा नहीं पाया"



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मैला आँचल में दिखने वाली बातें पूरे भारत में पायी जाती हैं जैसे भारत जैसे उत्सवधर्मी समाज में बात-बात पर गीत गाना, भऊजिया के गीत गाना, बारिश के लिये इन्द्र देवता को खुश करने हेतु जाट-जाटिन के खेल खेलना तथा संगीतात्मकता दिखती है "डिम डिग्गिक डिमिक"

सामाजिक स्तर पर दिखाया गया जातिवाद हर गाँव में व्याप्त है जहाँ एक जाति दूसरी से द्वेष करती है साथ ही जाति में निम्न जातियों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार भी पूरे देश में ही दिखता है।

मैला आँचल में धार्मिक विद्रूपताओं को दिखाया गया है जैसे धर्म का संस्थाकरण, दूसरों की जिंदगी बर्बाद कर सकता है जैसा आँचल में धर्म के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रातिनिधि महंत जी - विद्रूपताओं को उठाया है

"महंत जब लक्ष्मी को मठ पर लाया गया था, एक दम अबोध थी।"

गरीबी में महिलाओं की स्थिति कैसे दयनीय हो जाती है तथा उन पर खर्च करना भी गलत माना जाता है।

"लड़की की जात बिना हवा पानी बढ़ जाती है।"

साथ सहीयारिता के बढ़ने से व्याप्त महिला के प्रति विद्वेष एवं नियंत्रण मूलक व्यवस्था जन्म लेती है।

"जोरू जमीन जोर की नहीं तो किसी और की"

पिछड़ेपन के कारण प्रायः हर गाँव में स्वास्थ्य का नियम रहता है तथा जिन लोगों के पास खाने के पैसे नहीं होते वो भला कैसे इलाज करा सकते हैं। ये दिखाया है - "जिस व्यक्ति के लिये भूख एवं गरीबी हो उसकी लेने वाला किसी का न होती"



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रामीण समाज में व्याप्त स्थानीय भाषा शब्दावली का सुन्दर प्रयोग भी हुआ जिस कारण व्यक्ति (पाठक) आंचल में खो जाता है।

राजनीतिक स्तर पर व्याप्त जातिवाद एवं धर्म के अनुसार पार्टी बनाना जैसी समस्या को भी दिखाया गया है।

इस प्रकार मैला आँचल में व्याप्त आंचलिकता पूरे भारतीय संस्कृति एवं ग्रामीण परिवेश में प्रतिबिंबित होती है इसलिये मैला आँचल निर्विवाद रूप से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। हालांकि अन्य आंचलिक उपन्यास नागार्जुन - बलचनामा; शानी का काला जल में भी आंचलिकता का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

Gk
11½

(ख) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महाभोज 1979 में मन्नू भण्डारी द्वारा रचित राजनीतिक उपन्यास में है जिसमें मन्नू भण्डारी जी ने तत्कालीन समय में व्याप्त राजनीतिक विद्रूपताओं को बड़ी यथार्थ रूप से अंकन किया है।

उपन्यास कला की दृष्टि से अवलोकन करें तो पहले स्तर पर उद्देश्य आता है लेखिका किसी उद्देश्य को लेकर नहीं चली है सिर्फ राजनीतिक यथार्थ का यथार्थ अंकन ही उद्देश्य है हालांकि अन्तिम पक्ष में लेखिका का उद्देश्य हावी हो जाता है किन्तु भी यह दुर्लभ यथार्थ श्रेणी का उपन्यास है।

चरित्र योजना की दृष्टि से

बेहद सृजनशील उपन्यास है सभी चरित्र स्वाभाविक एवं स्वतंत्र हैं सभी को अपनी स्वाभाविकता का मौका दिया है साथ ही चरित्र न तो कम है न ज्यादा, दा साहब जैसे



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

चरित्र को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है वहीं गौण चरित्र को कम महत्त्व दिया है।

भाषाशैली की दृष्टि से

सृजनशील उपन्यास है लेखिका ने सीधे सपाट शैली से यथार्थ की अभिव्यक्ति की है भाषा एकदम स्पष्ट एवं पात्रानुकूल है इसलिये दा साहब का अंग्रेजीपन एवं हीरा का ठेठपन झलकता रहता है।

वातावरण स्तर पर

वातावरण सघन है किसी विशेष क्षेत्र का जिक्र किये बिना वातावरण रचा है जिस कारण उपन्यास उत्तरी राज्य की तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था का यथार्थ अंकन कर पाया है

कथोपकथन छोटे-चुस्त

गतिशील है सक्सेना - बिन्दु तुम्हारा दोस्त था न?

बिंदा - नहीं दुश्मन

सक्सेना - क्या दुश्मन



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कथानक/अन्तर पर महाभोज में पर्याप्त कसाव है कहीं भी ठहराव एवं नीरसता नज़र नहीं आती है शुरू से अंत तक एक लय में बना रहता है जो लेखिका कौशल एवं संघर्ष का कमाल है।

अतः महाभोज एक सफल उपन्यास है तथा उपन्यास की कला की दृष्टि से प्रत्येक स्तर पर लेखिका ने पर्याप्त लेखन कौशल का परिचय दिया है जिस कारण महाभोज आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाये हुये है।



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' में समकालीन दलगत राजनीति का जन-विरोधी चरित्र विश्वसनीय तरीके से उभारा गया है- इस कथन का परीक्षण कीजिये। 15

महाभोज मन्नू भण्डारी द्वारा रचित उपन्यास है जिसमें राजनैतिक विद्रूपता का यथार्थ अंकन हुआ है तथा तत्कालीन समय में व्याप्त दलगत राजनीति, जन विरोधी चरित्र को भी उभारा गया है।

जैसे-जैसे जनता अपरिपक्व एवं जागरूकता की कमी दिखायेगी तब तक दिखावे की राजनीति का प्रचलन बढ़ जायेगा जैसे दा साहब लोगों का लिए जितने भी लिये होते को साथ बैठाते हैं "एकदम हलका बबुआ रह गया, उसे कहा नसीब हुआ गाड़ी में बैठना वो भी दा साहब की"

आप ही दा साहब दलित लोगों के वोटों से चुनाव जीतते हैं लेकिन किंतु सुभचिंतक जोरावर ने है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501

तथा जोरावर को बचाने के लिए बिंदा पर भी बलजाय लगवा देते हैं

साथ ही लोचन कथा के माध्यम से दिखाया है कैसे मंत्रिमण्डल की खरीद फरोख्त चलती है। जब वो मंत्रिमण्डल गिराने की बात करते हैं तभी राव एवं चौधरी दा साहब के पक्ष में चले जाते हैं।

"क्या इसी दुच्चेपन की सौदेबाजी के लिये मंत्रिमंडल गिराने की बात कर रहे थे।"

बिहारी बाई के माध्यम से सामान्य जनता के प्रति विद्वेष भाव दिखाया गया है।

"अजीब अहमक हैं ये स्साले देहाती भी"

सुकुल बाबू जो कि दलितों की पराह से आज तक की सबसे बड़ी रैली कर पाये हैं किन्तु आन्तरिक स्तर पर उनके प्रति विद्वेष से भरे हैं।

जैसे "अब बचे हुए सारे वोट अपनी ओर करने पड़ेंगे, तब बात बनेगी लेकिन इन नीच जात वालों का भरोसा तो नहीं।"

इस प्रकार मन्नू भण्डारी ने राजनीति में व्याप्त दिखावा, दुहरापन, जन विरोधी चरित्र एवं स्वार्थ का यथार्थ अंकन किया गया है जिसके कारण दशकों बाद भी महाभोज आज भी के लिये प्रसांगिक हो पड़ा है।

प्रासंगिक

8/15

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation